Appendix. 4

परिशिष्ट - ४

मुहम्मद कृत भगवंतराय खीची का जंगनामा

(पृष्ठ ३८१ - ३९३)

श्री भगवंतराय खीची का जंगनामा

श्री गणेशाय नम: श्री हनुमते नम:

अजब ए साहिबे कुदरत कि जिसने जग संवारा है
खुदाए एक मौला है, वही परवरदिगारा है
खड़ा बन्दा कमर कसकर तमन्ना का लिए लश्कर
नजर है फज्ल उसके पर वही आमुजदिगारा है
मुहम्मद सरवरे आलम मगर वह फिक्र हम दम था
हंसी नाजो दया करदन निपट अन्दर अपारा है
बढ़ी नदी कयामत की उमैद हम को सलामत की
देखो किश्ती सफायत की चढ़ाकर पार उतारा है
सकल मुदो सुनो करखा कहें अब जंग औ झड़का
अगर रुस्तम सुनै धरका कि ऐसा सख्त मारा है
कुंवर राजा अरारु का बहादुर रण संघारू का
बली भगवंत मारु का हजारों मैं सुमारा है
सवार हो जब बजै डंका जमी लरजै कंपै लंका
किसू से ना करै संका तहव्वर का पहारा है
बड़ा नवाब आला था वजीर आजम का सालाथा
नसे जंग का झुकाला था कि नामश जोंनिसारा है
फतेपुर जा किया डेरा सुना जिस वख्त से घेरा
जमी ची नैजवी होकर करैथा सेर से टक्कर

लगी उसके भली चक्कर सितम का यह लुमारा है

भगा हारा व मुख मोरे कहीं हाथी कहीं घोड़े

क्वायल भी कहीं छोड़े न सिर चीरा संभारा है

फतेहकर सहर को दौरा कि चक्कर लगा चहुओरा

सभी लूटा न कुछ छोड़ा जहां तक माला सारा है

वजीर आजम खबर पाई कि लश्कर को सिकस्त आई

कहा था कार फरमाई पड़ा क्या अट भवारा है

किया पारा पुलै डैरा चढ़ा लश्कर को लै घेरा

जमी को कजी वरजोरा गनी ऊपर सिधारा है

तबल नक्कार सब बाजे सिपाही साज सब साजे

हुए हमराह सब राजे को आए गोल मारा है

धमक सुन मरहठा भड़के सरहदी तुर्कि थे फड़के

उतर कर नरमदा सड़के, हटा कर पार उतारा है

बुन्देलों की तरफ आया, जगतराव पेसवा लाया

सरोपा लुत्फ को पाया किया अजवस मुदारा है

जगा सो राम चन्दर आकर मिला खिदमत में वो जाकर

हंसै उसके तई लाकर किया जमुना गुजरा है

चला एलगार जोरे से, तजम्मुल लोर सोरै से

सवा दो लाख घोड़े से किया कोड़ करारा है

उधर भगवंत भी जलकर गया जमुना उतर चलकर
जो गाजीपुर दखल डाला बुंदेले राव ने पाया
अवल राजा परम छाया महाराजा कुमारा है
मदद को मीर खां आया अमलदारी को साहैब आया
किले वे मुल्क के तौरा किया बस खाक सारा है
चढ़ा दिल्ली वजीर आया उधर भगवंत चढ़धाया
असोथर थान चढ़ लाया लुहे से कोट मारा है
कौड़ा का मीर खां नायब न उसकी राय थी सायेब
रहा था शेर सौ बायब उड़न उसका सितारा है
कहा तब राव सौं जाकर बढ़ा भगवंत फिर आकर
कि सायेब राय फरमाकर तैयारी को संभारा है
सुबह चलना है मत सोओ उनींदे नयन को धोवो
सिपाही सब सवार होओ नकीबों ने पुकारा है
कसो हाथी उपर अम्बारी झलाझल पावरें डारी
चले जैसे घटा कारी चमक दन्दान तारा है
घोड़ों पाखर पड़ी देखो सुघर कांटे जड़ी देखो
हाथों बर्छी बड़ी देखो कमर जमधर कटारा है।
बंधे ढालें व तर वारे सिपाही और सरदारा
चले कर कूच झलगारा, अटावा वे सुमारा है

रही जब आय आखिर शब हुआ तैयार लश्कर तब
घरी पल कूच होता अब यही दिल में करारा है
उधर भगवंत चढ़ धाया निकर मैदान में आया
मुकाबिल हो कवल पाया बजा मारू नकारा है
फतेगढ़ को सिला साजे नफीरी नाद मिल बाजे
मरु वाजन सभी गाजे आ करवाले सुधारा हैं
सदा हुतुत कुडुम कुडकुड गुडुम गुड गड
अगर घु घुतुडुम तुड तड़ातड़ तहारा है
बड़ा सा ठाठ ठठकर कर जरी जामा समेट कर कर
आगे घोड़े डपट कर कर खड़ा रन इंतिजारा है
छुटैं तो पैघड़ा धड़ से सुतरुनाले भड़ा भड़ से
धमाके हो धमा धम से फलक बे अख्तियारा है
सभी आलम जु तह बाला गमन डोला गया हाला
जमी आय मुहं चाला दबा बासुकि हियारा है
लगै गोली तनातन से तड़क जातीं टनाटन से
हनै ऐसे दनादन से कि धरती में दरारा है
पड़ा रन बीच घमसाना सुना तोपों का घहराना
तो ख्वाजामीर मुरझाना भगा हाथी चिंघारा है
लड़ा लड़कर न टारा पाव लगी गोली यकायक जा

गिरा हाथी सौ साहेब राय कि ख्वाहिस किर्दगारन है
मिलातब रामचन्दर आकर लिया लोहा भला आकर
पड़ी तलवार तिरछाकर कि मह नामत पसारा है
वही दतिया का राजा था कि नामश मुल्क वाजा था
घोड़े दल साजि साजा था गिरा रण मैं जुझारा है
कोई जिन्नत मकां पाया कोई सन्मुख नहीं आया
कोई कारी जख्म खाया कोई प्यासा विचारा है
भगा लश्कर जिधर तीधर चला जावे कहां किधर
परे मारे इधर उधर कि मिट्टी खाक सारा है
वजीर आजम को ऐलगारा खबर दी जाय हलकारा
हुआ लश्कर सभी वारा गया उड़ ज्यों कि छारा है
लिखा खत तेगरामी को हकीकत उस तमामी को
सहादत खां नमामी को कि तुम पर बोझ भारा है
दरस दोस्ते वली देखो उसे आले नवी देखो
सोफरजन्दे अली देखो बदस्त बस जुल्फकारा है
मीरो नवाब आली का कि साहेब एख्त दारी का
पुरब पच्छिम उत्तर दक्खिन सुजायत कांप हारा है
नवल कांपा डरा सरका छुटा था पच्छिम गढ़ का
चन्देलों से किया लड़का चचेड़ी से उजारा है

गजाने भोग का खुश है हनूसिंह राव भी बस है
उसे शमसीरा का जस है डरा सब बैस वारा है
जभी वह बम्ब दे चढ़ता अदू की पसुरिया गढ़ता
भड़ा भड़चक्कै भरता बड़ा बांका जुझारा है
अवाजा फतेह का सुनकर किया दूरफान दौरा पर
गिरा उछल महल अंदर कि नामर्द चिकारा है
वचा जयसिंह नम्बर था जिसे राठौर सब डरता
कभी सैखी नहीं करता करें जब खार खारा है
आर कबहूं किया जौरा सवा दो लाख लै घोड़ा
उसदिम उसका मुंह तोड़ा कियागिर खाक सारा है
पड़ा था लखनऊ डेरा विठूर आया उतर बेड़ा
जो गाजीपुर को जा घेरा वहां डेरा संभारा है
जभी नवाब वहां आया जभी आराम फरमाया
करावल जा खबर लाया कि आ पहुंचा गंवारा है
नकारा जंग का वाजा तुरत हाथी पै चढ़ गाजा
सिपह पीछे से दल साजा अगू वह सह गंवारा है
कई जब तुंग फौजै हैं अजवतर है कि अनजय है
गोया दरिया की मौजै हैं न जिनका वार पारा है
सभों के हाथ भाले हैं सिला सिलह्ट की ढाले हैं

पर कांधे दुशाले हैं तमाशा साहे वारा है

अछा सामन्त रण खेला उधर भगवंत अलबेला
बड़ा था हाथ में सैला कमर जमधर कटारा है

केशरिया सबका वाना है लगे तरकस कमाना है
अजब गब्रू जवाना है कि प्यादा क्या असवारा है

घुमड़ आए जों दल वादल हुआ पिरथी में खलमंडल
हुआ तब इन्द्र कों हल चल सुना जब मार मारा है

निसानर बान फहराते सुना गोलों कों घहराते
खड्ग बिजुली से चमकाते रहकलों का धरारा है

चलैं गोली सिनिनिन बोलैं नावक भिनिनिन
टूटैं वख्तर छिनिनिन गोया तबरो कल्हाड़ा है

कौं जब बान कह कह कह लोगों का होशजहं जहं जहं
कोई वह रोज वह वह वह भभूका अरु सरारा है

भरों तरकस कमानों से चलें तेगा जवानों से
गिरें रणवीर बानों से कि मरघट सा पसारा है

खिचरनें तीन फौजें कर समुन्दर की सी मौजें कर
बड़ी सी एस अफजूं कर पकर भाला संभारा है

कहा भगवन्त अयारा नहक सब मिल देवो जां
जहां पर हो सहादत खां करो पिल एक वारा है

कहा मुखबिर खबर टेरे जो हलका हाथियों केरे
अमीर उमरा सभी घेरे नहीं कुछ अख्तियारा है
कहा अब देर मत लागे सभी ढीली करो बागें
जो चाहो त्यो फिर भागे तो हरगिज ना गुजारा है
उठा बागें चले ज्वाना अबू भगवन्त मरदाना
जहां पर था सहादत खां, तहां सीधे सिधारा है
परे हर तरफ बौछारें जिधर दुपटे उधर मारे
घोड़े हाथी भी चिग्घारे न पैदल का सुमारा है
जभी जासूस मन धाया अर्ज बेगि से समझाया
सबरदारी को कर वाया अभी पहुंचै गंवारा है
तुरत हाथी को दल लाकर सहादत खां अलग जाकर
अबू नायब तहां आकर जवां मर्दी संभारा है
तभी भगवंत वहां पहुंचा कहा लोगों से मैं पूछा
कौनसा है सहादत खां मेरा जी बेकरारा है
अबू बोला कि ऐ मकहूर मैं नवाब हूं मशहूर
तुझे लड़ना अगर मंजूर फिर क्या देर दारा है
न बूझा फौज माजी को लगाकर रहताजी को
अबू से मर्द गाजी को पहुंच भाला से मारा है

किते हौदा किए खाली किते घोड़े मुँई डाली
किते घर हाथ बे घाले भँगैले जान प्यारा है
नमक खाया सहादत का चखा सर्वस सहादत का
मकां पाया है जिन्नत का वही दारुक्त करारा है
मुगल सब डर गए सारे जिधर पाए उधर मारे
सिपाही बन्दगी वारे किया समसेर वारा है
झमाझम मारते बढ़कर करैं टुकड़े भिलिम वखतर
कि जैसे घन निहाई पर कुटै लोहा लुहारा है
ढलैं ढालें छतर छाए, जैसे बादल उमड़ आए
लहू के मैह बरसाए बहे पर वार धारा है
लड़ें रण सूरवां जंगी करैं तरवार बहुरंगी
सहादत खान के संगी फिरें होकर पुकारा है
भवानी सिंह लड़ता है तो मारा मार करता है
कदम आगे को धरता है न पीछे पांव टारा है
जिसे भगवंत ललकारे भवानी सिंह उसे मारे
तुरत हो जाय जल खारे कठिन लोहा दरारा है
झपट तेजसिंह आया दपट भगवंत दबकाया
लपट कर सौजखम खाया लगाया खूब वारा है

दो हत्थी खीच तलवारें झमा झम जोर से मारें
एका एक न को ललकारें जैसे कुश्ती अखारा है
हुआ जैसे महाभारत किया लोगों ने पुरुखारथ
हुए सब सूर किरतारथ रहा कीरित पसारा है
आघानी रुधिर सों घरती चौंसठ जोगिन खप्पर भरती
चमुण्डा जा बयां करती उतर अवतार धारा है
फते भगवन्त जब पाई, चिठी सब परगने धाई
दोहाई देशमें छाई कोड़ा का फौजदारा है
फते की नौबतें बाजी नहीं दूसर मरद गाजी
हुई खिलकत सभी राजी तुम्हीं रण खंभ गाड़ा है
मिटा रैयत का सब खटका कहै भगवंत का करखा
गया नवाब का धड़का कि आ पहुँचै गँवारा है
समुझ नवाब हकीकत को चढ़ैतों की फजीहत को
बोला नवाब हरीफत को यही गत में विचारा है
लिखा तारीफ अलताफी सुलहनामा कवल साफी
वो चौदह परगना माफी कि तुमको नानकारा है
अतायत सह कि सरलीजै कि सूबे मत खलिस कीजै
खराजे यको न कुछ दीजै ये सुलतानी गुजारा है

पढ़ा भगवंत परवाना ऐ साचौ झूठ लिख जाना
खुशी अरु गमन कुछ आना करैगा क्या हमरा है
येहरबां मालिके कुल है उसी का सब तवस्सुल है
जिसे हसमत तजम्मुल है ख्वाहिस किद्रगारा है
खबर मैली कि सुन कर कर सो ठाकुर सब बिदालेकर
तसल्ली कों निसां देकर सभी घर कौ सिधारा है
इधर नवाब दिनरातैं करैं भगवंत की घातैं
न सह्लार समुहातैं अजब डर जी मैं डारा है
जिते नामी रहे राजे चढ़ैता जंग के भाजे
सभी भगवंत से भाजे जैसे सैरों से पाह्ला है
न मुर्दों से हो मुतफ रिकि सहादत खां कहा जलकर
यहीं लाता मैं उसका सर मगर कौलो करारा है
उसी दम यह खबर पाया कौड़े का चौधरी आया
अरज अपनी भैजवाया गुलम उम्मैद वारा है
तुरत नवाब लिखये दै दिया समुझाय कै सफा कौ
जगन वंशी की जुरयत कौ चबा बीरा सिधारा है
अगर एक बाल दौलत है नहीं यह बात सोहरत है
महीना भरकी मोह्लत है तौका मो सिर गवारा है

चंदेले चौथ वखतरिया विसेने बैस कनपुरिया
अछे कछ्वाह कल चुरिया चुनै से सद सुमारा है
केसरिया करि चले बाना जैसे भगवंत के ज्वाना
इधर भी सब यही जाना वही रुकसत के पारा हैं
चला दुर्जन मुकाबिलपर उठा भगवंत पूजा कर
थी एक हाथ में जमधर रखे हाथे दुधारा है
तभी दुर्जन ने ललकारा कहा भगवंत कर वारा
मैं तुझ पर हाथ क्या घालूं ब्राह्मण तू विचारा है
तभी दुर्जन दिलेर होकर गया पिल मुष्टभेड़ होकर
लगाया वार शेर होकर सु सीने पर संभारा है
समुझ भगवंत मरजी हक किया उस्वासना मुतलक
हुआ जख्मी सु सीना शक सभी हा-हा पुकारा है
उसी दम पारखद आए तुरत बैकुंठ पहुंचाए
भवानी सिंह जखम खाए वह भी वहीं सिधारा है
गिरे रण सूरवां जेते गए सुरलोक कौते ते
रहा दुर्जन थमा खेते फते उसकी पुकारा है
सहादत खां खबर सुनकर फतैह की अर्जिया देकर
सु दिल्ली को गुजारा है

ये मर्दों का कहा बाना जमा मर्दी जगत जाना
ये कर डारा है मन माना मुहम्मद खां सचारा है
मलौंदी वतन है मैरा वहां से जाजमऊ नैरा
कौड़े से कोस दस डेरा निपट गंगा किनारा है
चहलसी चहल सन रहतै मुहम्मद शाह के कहते
हम उसके राज में रहते वही साहैब हमारा है

संवत १६११ असाढ़ मासे शुक्ल पच्छे तिथऊ त्रितियाम दिन बुधवासरे को लिखा राजचंद असौथर ।

युगुल किशोर